E Content for students of Patliputra University, Patna

आर० आर० एस० कॉलेज, मोकामा

राजनीति विज्ञान

स्नातक प्रतिष्ठा Part II Paper IV

भारत - पाकिस्तान संबंध वर्तमान समय में.

डॉ० उमेश चन्द्र शुक्ल
एसो० प्रोफेसर, राजनीति विज्ञान

भारत - पाकिस्तान संबंध अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति का एक जम्बा विषय वस्तु है। यह अविश्वास, द्वेष, हस्तक्षेप साम्प्रदायिक तनाव, छद्म युद्ध, आतंकवाद तथा युद्ध से जुड़ा एक यक्ष प्रश्न है। इसके समाधान के जितने भी प्रयास किये जाते रहे हैं, स्थिति उतनी ही उलझती जाती है। भारत की प्रायः सभी सरकारों ने शांतिपूर्वक समाधान का प्रयास किया किन्तु पाकिस्तान की प्रजातांत्रिक सरकारें हों या तानाशाही उनपर कोई असर नहीं पड़ता। दोनों देशों के बीच कई युद्ध भी हुए तो कई समझौते भी, किन्तु पाकिस्तान कटुता की भावना से इतना ग्रस्त है कि रह-रह कर युद्ध की स्थिति पैदा करने में बाज नहीं आता। आजादी के साथ, कबिलाई युद्ध, 1965, 1971 का युद्ध पुनः वाजपेयी सरकार में कारगिल युद्ध हुए। साथ ही साथ ताशकंद समझौता, शिमला समझौता, लाहौर और आगरा वार्ता, नवाज शरीफ के काल में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के कई प्रयास के बावजूद स्थिति जस के तस बनी हुई है। वर्तमान समय पाकिस्तान भारत में आतंकवादियों की सहायता, सीमा पर सैनिक हस्तक्षेप, अलगाववादियों को बढ़ावा, कश्मीर के मुद्दे को अन्तर्राष्ट्रीयकरण करने का प्रयास आदि के माध्यम से भारत को प्रभावित करना चाहता है। बम्बई आतंकवादी घटना, संसद की घटना, पठानकोट पुलवामा आदि की घटनाएँ होती रही हैं।

उपर्युक्त संक्षिप्त किन्तु व्यापक विश्लेषण से स्पष्ट है कि पाकिस्तान की भारत विरोधी नीति पहले की तरह जारी है। भारत कई बार सर्जिकल स्ट्राइक के माध्यम से पाकिस्तान को सबक सिखाने की कोशिश किया है। किन्तु वह अपनी नीति में परिवर्तन लाने को तैयार नहीं है।

यहाँ यह प्रश्न उठाया जाना स्वाभाविक है कि दोनों देशों के बीच इतना तनाव संबंध क्यों रहने के क्या कारण हो सकते हैं। इसके लिए निम्न लिखित उत्तरदायी कारणों की ओर ध्यान दिया जाना आवश्यक है —

(I) सांस्कृतिक एवं सामाजिक भिन्नता — एक ही क्षेत्र से ऐतिहासिक एवं भौगोलिक रूप में जुड़े होने के बावजूद पाकिस्तान निर्माण एवं भारत विभाजन के लिए जो अविश्वास एवं घृणा का वातावरण तैयार किया गया वह पाकिस्तान को मनोवैज्ञानिक दृष्टि से प्रभावित किया है।

(II) राजनीतिक ढाँचा — भारत प्रजातंत्र को अपनाया है तथा तभी से यहाँ सफलता पूर्वक चल रहा है। प्रजातांत्रिक तरीके से सरकारें ~~बदलती~~ बदलती हैं। पाकिस्तान में कभी कभी दिखावे के लिए निर्वाचित सरकारें बनती हैं। वहाँ की सत्ता सेना एवं धार्मिक कट्टरपंथी के साथ-साथ आतंकवादियों के नियंत्रण में है।

(III) विदेश नीति — भारत गुटनिरपेक्षता के आधार पर स्वतंत्र विदेश नीति पर चलता है। पाकिस्तान की नीति विदेशी शक्तियों — अमेरिका एवं चीन पर निर्भरता की रही है। वह महाशक्तियों की विदेश नीति का एक साधन है।

(IV) अल्पसंख्यकों की नीति — भारत अल्पसंख्यकों को राष्ट्र की मुख्य धारा से जोड़ता है। इसकी नीति पंथनिरपेक्षता की है। पाकिस्तान एक मुस्लिम देश के रूप में अपने को प्रतिष्ठित करना चाहता है। भारत के अल्पसंख्यकों को भारत के विरुद्ध भड़काकर उपयोग करना चाहता है।

(V) विकास — भारत अपने विकास के प्रति समर्पित है। जबकि पाकिस्तान विकास के प्रति नहीं महाशक्तियों द्वारा दिये गये रूप पर निर्भर रहना चाहता है परिणाम स्वरूप उसकी आर्थिक स्थिति दयनीय रहती है।

(VI) आणविक शक्ति — पाकिस्तान चीन की मदद से अपने इस अणुबम का धौंस दिखाकर भारत को उठाना चाहता है। जबकि भारत स्वयं इस क्षेत्र में अपना विकास काफी कर चुका है।

भारत-पाकिस्तान के उपर्युक्त नीतिगत आधारों के विश्लेषण से स्पष्ट है कि तनाव का कारण सीमा, कश्मीर, मुसलमान नहीं हैं। ये सभी तो केवल बहाने हैं। अगर पाकिस्तान अपने नीतिगत मामलों में परिवर्तन नहीं लाता अर्थात जबतक वे शांति, विकास, सामाजिक सौहार्द का वातावरण नहीं बनाते तबतक न वहाँ सच्चा लोकतंत्र आ सकता है, न ही उनकी गतिविधियाँ बन्द हो सकती हैं।

वर्तमान समय में पाकिस्तान अपनी नीति में सीमा उल्लंघन की हजारों घटनायें कर चुका है। कोरोना जैसे वैश्विक संकट के दौर में भी अड़ा रहा है। ऐसा कर वे आतंकवादियों को भारत प्रवेश में मदद करना चाहता है। भारतीय मुस्लिम वर्ग को भारत के विरुद्ध भड़काने का प्रयास करता है। कश्मीर भारत की आंतरिक समस्या है तब भी धारा 370 में परिवर्तन, CAA जैसे भारतीय कानून, तलाक प्रथा पर कानूनी नियंत्रण आदि के आधार पर विश्व मंचों, संयुक्त राष्ट्रसंघ में भी अपनी राग अलापता है। चीन इसमें उसका साथ देता है।

वह कश्मीर तथा अन्य मामलों पर चीन एवं अमेरिका से मध्यस्थता का प्रयास करता है। भारत स्पष्ट कर चुका है कि शिमला समझौते के तहत कश्मीर द्विपक्षीय समस्या है अतः इसमें किसी अन्य देशों के हस्तक्षेप का प्रश्न ही नहीं उठता।

भारतीय नागरिक कुलभूषण जाधव की रिहाई का आदेश अन्तर्राष्ट्रीय न्यायालय द्वारा दिये जाने के बावजूद पाकिस्तान इसे मानने को तैयार नहीं है।

भारत ने भी पाकिस्तान अधिकृत कश्मीर, गिलगिट आदि कब्जाये हुए क्षेत्रों को खाली करने की माँग कर चुका है तथा बलोचीस्तान में मानवाधिकार के उल्लंघन का मामला उठाता है। करतारपुर साहब गुरुद्वारे के नाम पर उसकी कुत्सित राजनीति का पर्दाफाश हो चुका है।

पाकिस्तान आतंकवादियों को सहयोग एवं बढ़ावा देने के नाम पर कायम है। कई विश्वमंचों पर भारत

हाथ बढ़ाने के बावजूद पाकिस्तान पर कोई असर नहीं है। एशियाई देशों को महत्वपूर्ण संस्था SAARC के प्रति भी पाकिस्तान का रवैया उपेक्षापूर्ण है। SAARC देशों के लिए कोरोना संकट का सामना करने हेतु आपात कोष स्थापित करने के बावजूद उसका व्यवहार सहयोगात्मक नहीं है।

इस प्रकार पाकिस्तान के व्यवहार, दृष्टिकोण आदि में परिवर्तन के कोई आसार फिलहाल दिखाई नहीं पड़ रहे हैं। प्रधानमंत्री इमरान खान की सत्ता सेना तथा आतंकवादियों के नियंत्रण में है। किसी भी समय सत्ता परिवर्तन हो सकता है। आतंक के विरुद्ध समस्त गतिविधियों जारी रहने की ही उम्मीद है।

ऐसी स्थिति में भारत के समक्ष इस समस्या के समाधान का रास्ता खोजना है। भारत की समस्या केवल सीमा पर आतंकवाद ही नहीं बल्कि अपने देश के निवासियों का विश्वास भी बनाये रखने का है। किंतु यह सच है कि भारत अपनी नीति एवं प्रयास के द्वारा ही इस संकट का सामना करेगा। भारत एक जिम्मेवार देश है। अतः इसे बहुत सी बातों को सोचना पड़ता है।